शोध मंथन, Impact Factor 5.463 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X,
Vol. 9, Issue 4, pp (57-61), Month: Dec. 2018 

# तुलसी के रामचरित मानस में प्रकृति चित्रण

**डॉ0 पूजा रानी**
सहा0 प्रोफे0, हिन्दी विभाग, के0वी0ए0 डी.ए.वी. कॉलेज फॉर वूमैन,
करनाल, हरियाणा, भारत ।
Email : poojaraniramesh@gmail.com

**सारांश**

*प्रकृति और मनुष्य परस्पर सहचरणी हैं। दोनों का अटूट सम्बन्ध है। मनुष्य ने जब आँखें खोली स्वयं को प्रकृति की गोद में पाया। धर्म, दर्शन साहित्य कला सभी क्षेत्रों में प्रकृति का अग्रगण्य स्थान है।*

*साहित्य भी प्रकृति से ही अभिप्रेरित है। साहित्यकार प्रकृति रूपी आँगन में बैठकर ही अपनी कृति को सजीव बनाते हैं, प्रकृति के अभाव में काव्य निष्प्राण है। काव्य को सजीवता प्रकृति ही प्रदान करती है।*

*नदी, पहाड़, झरने, चाँद सितारे, नक्षत्र बारिश, संध्या आदि सभी प्रकृति ही है जो निरंतर कवि हृदय, साहित्यकारों और कवियों का निरंतर, काव्य रचना के लिए प्रेरित करते रहते हैं। भक्तिकालीन साहित्य में प्रकृति और जगत को मिथ्या स्वीकारा गया है। भक्तिकालीन काव्य सहजता का काव्य है और तुलसी जी के काव्य में प्रकृति चित्रण प्रचुर मात्रा में मिलता है। लेकिन सहजता के साथ। जब तुलसी जी के पात्र दुःखी प्रतीत होते हैं तो उनके साथ प्रकृति भी दुःखी दिखाई देती है। जब उनके पात्र प्रसन्न होते हैं तो प्रकृति भी उनके साथ हर्षित होती दिखाई देती है।*

## प्रस्तावना

**रामचरित मानस में प्रकृति वर्णन** एक उल्लेखनीय प्रवृत्ति मानी जाती है। गोस्वामी तुलसीदास ने यथास्थान प्रकृति वर्णन किया है। प्राकृतिक चित्रण प्रायः आलम्बन और उद्दीपन रूप में ही प्रस्तुत हुआ है। कहीं–कहीं कवि प्रकृति के उपदेशात्मक तथा पृष्ठभूमि रूप का भी वर्णन करता है। तुलसीदास जी ने बालकाण्ड के पुष्पवाटिका निरीक्षण में प्रकृति के सौम्य व सुखद रूप का वर्णन करते हुए कहा है।

**"बागु तडागु बिलोकि प्रभु हरशे बंधु समेत।
परम रम्य आरायु यहु जो रामहि सुख देत।।"**

अर्थात् बाग और सरोवर को देखकर प्रभु श्री रामचन्द्र जी भाई लक्ष्मण सहित हर्षित हुए यह बाग वास्तव में परम रमणीय है जो जगत को सुख देने वाले श्रीरामचन्द्र जी को भी सुख दे रहा है। तुलसी के राम जब प्रसन्न होते हैं तो सारी प्रकृति सुखमय हो जाती है जब राम दुःखी

होते हैं तो उनके साथ सारी प्रकृति दुःखी प्रतीत होती है।

**"निर्झर जलपावने कमल खिले**
**विचरे वे पक्षी पशु दर भूले।"**

तुलसी जी ने रामचरितमानस में कई स्थलों पर प्रकृति का विषद वर्णन किया है। विषेशकर जब भरत राम से मिलने के लिए चित्रकूट जाते हैं तब कवि ने प्राकृतिक सुषमा का बड़ा ही मनोहारी वर्णन किया है। प्रकृति चित्रण का उदाहरण देखिए :

**"राम वास वन संपत्ति भ्राजा। सुखी प्रजा जनु पाद सुराजा**
**सचिव बिरागु विवेक नरेसू। विपिन सुहावन पावन देखु।**
**खगहा करि हरि बाघ बराहा। देखि महिष वृष साजु सराहा।**
**बथरु बिहाइ चरहिं एक संगाजहँ तहँ मनहुँ सेन चतुरंगा।।"**

तुलसी जी कहते हैं कि श्रीरामचन्द के निवास से वन को सम्पत्ति ऐसी सुशोभित है मानो अच्छे राजा को पाकर प्रजा सुखी हो। सुहावना वन ही पवित्र देश है। विवेक उसका राजा है और वैराग्य मंत्री है। गैंडा, हाथी, सिंह, बाघ, सूअर, भैंस और बैलों को देखकर राजा के साज को सरहाते ही बनता है। ये सब बैर छोड़कर राम राज्य में एक साथ विचरते हैं। प्रकृति में राम राज के कारण सामंजस्य स्थापित हो गया है।

तुलसी जी कहते हैं कि श्रीराम जी के पर्वत की शोभा देखकर भरत के ह्रदय में अत्यंत प्रेम हुआ जैसे तपस्वी नियम की समाप्ति होने पर तपस्या का फल पाकर सुखी होता है वैसे ही चित्रकूट की शोभा देखकर भरत जी प्रसन्न हैं।

तुलसी जी को चित्रकूट अत्यंत आनंदित करता है। एक तो वहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य, दूसरा तुलसी के प्रभु का वहाँ वास। तुलसी जी ने चित्रकूट में पग–पग पर प्रकृति सौन्दर्य का वर्णन किया है। चित्रकूट में असंख्य जाति के वृक्ष लताएँ और तृण हैं तथा बहुत तरह के फल–फूल और पत्ते हैं। वृक्षों की छाया सभी पशु–पक्षी व मनुष्यों को सुख देने वाली है।

चित्रकूट का प्रत्येक तालाब कमलों से भरा हुआ है। जल के पक्षी उसमें गूंजार करते हैं। बहुत रंगों के पक्षी और पषुओं को राम की कृपा से तुलसीदास जी ने बैर भुलाकर एक साथ विहार करते दिखाया है।

गोस्वामी तुलसीदास जी का प्रकृति चित्रण उनकी पहचान बन गया है। अयोध्या के महलों में रहने वाले नर नारियों को चित्रकूट की सुन्दरता के कारण महलों के सुख बौने प्रतीत होते हैं। चित्रकूट आकर सभी आनंदित होते हैं और वहाँ की प्राकृतिक सुंदरता का आनंद लेने के लिए वन में चारों ओर विचरते हैं। जैसे पहली वर्षा के जल से मेंढक और मोटे हो जाते हैं वैसे ही इस वन प्रदेश में अयोध्या के नगरवासी अत्यंत प्रफुल्लित व प्रसन्न रहते हैं। चित्रकूट देखने का उतना ही आनन्द आता है जितना कि हरे भरे खेत का टुकड़ा।

**तुलसी के काव्य में प्रकृति का आलंबन एवं उद्दीपन** दोनों ही रूपों में वर्णन किया है। तुलसीदास जी समन्वयवादी कवि है तो यहाँ पर भी अपनी समन्यवादी सोच को परिलक्षित करते प्रतीत होते हैं।

तुलसीदास जी ने प्रकृति के सभी रूपों को ग्रहण किया है। तुलसी जी ने प्रकृति का उपदेशिका रूप अलंकार विधानात्मक रूप काव्य में सहज ग्राह्य है।

आलंबन रूप में तुलसी उतने नहीं रमे हैं जितने उद्वीपन रूप में आलंबन रूप में तो उन्होंने मात्र राम जी के जीवन यात्रा में पड़ने वाले पड़ावों का ही चित्रण किया है। जैसे पंपा सरोवर ऋष्यमूक पर्वत, किश्किंधा नगरी तथा गीतावली में समग्र रूप से है। राम व सीता के विरह और वियोगयुक्त संलाप में भी आलंबनात्मक रूप उस भावना से जागृत नहीं हुआ। यह सहज और सरल रुप से काव्य में सरलीकृत हो गया। इसके विपरीत तुलसी ने प्रकृति के उद्वीपन रूप को अपने समस्त काव्य में अधिक महत्ता के साथ ऐकिक किया है। यह सांकेतिक होते हुए भी पूर्ण समर्थ है। उनके काव्य में जो वर्ग, प्रिय के पास होने पर सुहावनी लगती है। प्रिय, विरह में वही विरह की पीड़ा को और अधिक तीव्र कर देती है। अरण्यकाण्ड में सीताहरण पर राम जी जब विलाप करते दिखाए गए तब शीतलता प्रदान करने वाली प्रकृति उनके लिए संताप बढ़ाने वाली निष्ठुर हो जाती है। और राम जी अपने दुःख को व्यक्त करने के लिए सीता जी की अनुपस्थिति में प्रकृति को हर्शित मानते हुए कहते हैं :

**सनु जान की तोहि बिनु आजू। हरे सकल पाइजनु राजू।।**

कि प्रकृति आज तुम्हारी अनुपस्थिति पाकर स्वयं का राज अनुभव कर प्रसन्नचित्त हो रही है। इसी प्रकार कवि ने पंचवटी की प्रकृति की प्राकृतिक सम्पदा का जो वर्णन किया है वह भी बड़ा ही मनोहारी बन पड़ा है।

उद्वीपन चित्रण में तुलसी जी का काव्य अत्यंत हृदयस्पर्शी बन गया है। सीता जी के विरह में व्याकुल राम का हृदय वसन्त ऋतु के आने पर भयभीत होने लगता है। राम जी को प्रतीत होता है जैसे भौरें, वन व पक्षियों को साथ लेकर कामदेव ने उन पर धावा बोल दिया हो।

श्रीराम जी के राज में वन प्रकृति सब प्रकार से आनंदित करने वाली है। पर्वत मनचाही वस्तु देने वाले तालाबों, नदियों, वन और पृथ्वी के सभी भागों में आनन्द व प्रेम उमड़ रहा है। राम जी के प्रसन्न होने पर बेलें, वृक्ष, फल और फूलों से युक्त हो गए। राम जी के स्वभाव के अनुसार पक्षी, पशु और अनुकूल बोलने लगे। वन में बहुत आनन्द था। तुलसी जी ने प्रकृति के आलंबन रूप का चित्रण भी बड़े ही आकर्षक व भावानुकूल किया है। जब–2 उनके राम पर कष्ट आए प्रकृति मुरझाई व संताप युक्त दिखाई पड़ी व राम की प्रसन्नता में प्रसन्नचित्त।

तुलसी जी ने अरण्यकाण्ड में प्रकृति के उद्वीपन रूप का हृदयस्पर्शी वर्णन कर राम की विरहवस्था का बड़ा सहज वर्णन किया है। पंचवटी में प्रकृति के दोनों कोमल व कठोर रूपों का तुलसी जी ने वर्णन किया है। सीता विरह में राम जी को समस्त, प्रकृति, कामदेव की सेना सी दिखाई देती है जो उनके घायल हृदय को और अधिक संतृप्त करती है।

तुलसी जी ने पंचवटी में वन, पेड़, फूल, पौधे, भौरें, चक्रवाक, बगले आदि पक्षियों का यथासम्भव सहज वर्णन किया है जो वहाँ के प्राकृतिक परिवेश का सुन्दर दृश्य वर्णन करते हैं। जैसे–सरोवर का अथाह जल सवा मछलियों से सदा भरा रहता है। तालाब में रंग–बिरंगे कमल खिले हुए हैं। भौरें मधुर गुंजार करते हैं। जल में मुर्गे और राजहंस बोल रहे हैं। वहाँ पर चक्रवाक,

बगुले आदि पक्षियों के समुदाय देखते ही बनते हैं। उनका वर्णन भी नहीं किया जा सकता। इसी प्रकार पंपा सरोवर की सुन्दरता भी अवर्णननीय है। चारों ओर वन के सुंदर वृक्ष हैं। बहुत प्रकार के वृक्ष नये–2 पत्तों और सुगन्धित पुष्पों से युक्त हैं। भौरों के समूह उन पर गुंजार कर रहे हैं। शीतल, मन्द, सुगन्धित एवं मन को हरने वाली हवा सदा बहती रहती है। कोयलें, 'कुहु', 'कुहु' का शब्द कह रही है। उनकी मीठी बोली सुनकर मुनियों का भी ध्यान टूट जाता है।

फलों के बोझ से झुककर सारे वृक्ष पृथ्वी के पास आ लगे हैं। जैसे परोपकारी पुरुष बड़ी सम्पत्ति पाकर विनय से झुक जाते हैं।

तुलसी ने प्रकृति के विशाल प्रांगण से विभिन्न उपादानों का अलंकारों के रूप में प्रयोग किया है। उन्होंने उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा रूप का तिश्योक्ति आदि अलंकारों के द्वारा वस्तु एवं भाव का प्रभावोत्पादक वर्णन प्रस्तुत किया है। अनेक स्थलों पर कवि ने प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन आलंकारिक शैली में किया है। कुछ पद्य तो ऐसे हैं जिनमें वे उत्प्रेक्षाओं की झड़ी लगा देते हैं। प्रकृति कभी मानव पीड़ा के लिए अनुकूल प्रकृति प्रस्तुत करती है तो कभी वातावरण का निर्माण करती है। इन दोनों रूपों में प्रकृति मानव की सहयोगिनी बनकर हमारे समक्ष उपस्थित होती है। जहाँ कहीं गम्भीर वातावरण की आवश्यकता होती है वहाँ, प्रकृति गम्भीर रूप धारण कर लेती है और जहाँ कहीं सुख तथा उल्लासपूर्ण वातावरण की आवश्यकता होती है, वहाँ प्रकृति आनंदित और उल्लासित दिखाई देती है। कविवर तुलसीदास जी ने वातावरण निर्माण अथवा पृष्ठभूमि के रूप में प्रकृति का सुन्दर वर्णन किया है।

**गोस्वामी तुलसी जी ने किश्किंधाकाण्ड में जो वर्षा ऋतु** का वर्णन किया है। वह परवर्ती कवियों के लिए एक उदाहरण है। आगे चलकर तो तुलसी जी ने समुद्र का मानवीकरण तक कर दिया है। किश्किंधाकाण्ड में वर्षा ऋतु वर्णन का एक उदाहरण देखिए :

**"दामिनि दमक रही धन माहीं।**
**खलकै प्रीति यथा थिर राहीं।**
**बरषहिं जलद भूमि निअराएँ।**
**जथा नवहिं बुध विद्या पाए।**
**बूंद आघात सहहिं गिरि कैसे।**
**खलके वचन संत सह जैसे।।"**

रामराज्य में पृथ्वी सदा खेती से हरी भरी रहती है। चन्द्रमा उतनी ही शीतलता और सूर्य उतना ही ताप देते थे जितनी जरूरत होती थी। पर्वतों ने अनेक प्रकार की मणियों की खान प्रकट कर दी थी सब नदियाँ श्रेष्ठ शीतल निर्मल स्वादिष्ट और सुख देने वाला जल बहाती थी। जब जितनी जरूरत थी मेघ उतना जल बरसाते थे।

**"लता विटप माँगे मधु चवहिं।**
**मनभावतो धेनु पय स्रवहिं।।**
**विधु महि पूर मयूखन्हि रवि तप जेतनेहि काज**

**मांगे वारिद देहि जल रामचन्द्र के राज।।"**

प्रकृति चित्रण में तुलसी जी ने कहीं कहीं दार्शनिक विचारों के अनुरूप काव्य बिम्ब प्रस्तुत किए हैं।

**निष्कर्ष**

इस प्रकार हम देखते हैं कि तुलसी के काव्य में प्रकृति वर्णन के सभी रूप देखे जा सकते हैं। उन वर्णनों में प्रकृति के उद्दीपन रूप को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। 'रामचरितमानस' में यथास्थान प्रकृति चित्रण को स्थान दिया गया है। तुलसी जी का प्रकृति चित्रण, सहज व उच्चकोटि का है। गोस्वामी जी की प्रकृति चित्रण का प्रभावोत्पादकता का कारण इनकी सहज अनुभूति है। तुलसी जी के प्रकृति चित्रण की जीवन्तता भी 'रामचरितमानस' को इतना सुगम व यथार्थ बनाती है।

**सन्दर्भ**


1. तुलसीदास कृत *'रामचरितमानस'*, बालकाण्ड, पृष्ठ संख्या **212**
2. तुलसीदास कृत *'रामचरितमानस'*, बालकाण्ड, पृष्ठ संख्या **498**
3. तुलसीदास कृत *'रामचरितमानस'*, बालकाण्ड, पृष्ठ संख्या **499**
4. तुलसीदास कृत *'रामचरितमानस'*, बालकाण्ड, पृष्ठ संख्या **509**
5. तुलसीदास कृत *'रामचरितमानस'*, बालकाण्ड, पृष्ठ संख्या **511**
6. तुलसीदास कृत *'रामचरितमानस'*, अरण्यकाण्ड पृष्ठ संख्या **607**
7. तुलसीदास कृत *'रामचरितमानस'*, अरण्यकाण्ड, पृष्ठ संख्या **615**
8. तुलसीदास कृत *'रामचरितमानस'*, अरण्यकाण्ड, पृष्ठ संख्या **617**
9. तुलसीदास कृत *'रामचरितमानस'*, अरण्यकाण्ड, पृष्ठ संख्या **618**
10. तुलसीदास कृत *'रामचरितमानस'*, उत्तरकाण्ड पृष्ठ संख्या **850**
11. तुलसीदास कृत *'रामचरितमानस'*, उत्तरकाण्ड पृष्ठ संख्या **851**
12. *तुलसीदास सृजन के आयाम'* शैल कुमारी, पृष्ठ संख्या **174**
13. *श्रीराम कथा*, क्षमा भटनागर, पृष्ठ संख्या **127**